राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

जीवनं सफलं तस्य, म्रियते स कदापि न।
यशः शरीरमक्षुण्णं, यस्य दिव्यं समुज्ज्वलम् ॥१७५॥

उसका जीवन सफल है, वह कभी मरता नहीं है ? जिसका यशरूपी शरीर दिव्य उज्ज्वल और अक्षुण्ण होता है।

Will the one whose life is successful ever die? His body of fame has a divine radiance and stays intact.

जीवनेऽस्मिँल्लघौ यावत्, सुकार्यमधिकाधिकम्।
सम्पाद्येत मनुष्स्य, बुद्धिमत्ताऽस्ति तावती ॥१७६॥

इस छोटे से जीवन में जितना ज्यादा से ज्यादा सुन्दर कार्य कर लिया जाय, मनुष्य की उतनी ही ज्यादा बुद्धिमत्ता है।

In this short life the person who does as much useful/good work gets that much wisdom.

जीविता दूष्यते व्यक्तिर्, मृता सातु प्रशस्यते।
जीविता चेत् प्रशस्येत, ततो लाभो महान् भवेत् ॥१७७॥

जीवित अवस्था में व्यक्ति को दोष दिया जाता है और मरने पर उसका प्रशंसा की जाती है। यदि जीवित रहते उसकी प्रशंसा की जाय तो उससे महान् लाभ मिलने की सँभावना बनी रहती है।

A person is criticised during the life and glorified after the death. If he would be admired during the life, then it would be possible to get a great benefit from him.

ज्ञानं कथं विवर्धेत, सततं पठनं विना ? ।

पठनस्यापि सामग्री, विना भाग्यं न प्राप्यते ॥१७८॥

निरन्तर पढ़े बिना ज्ञान कैसे बढ़े ? पढ़ने की सामग्री भी बिना भाग्य के प्राप्त नहीं होती है ।

How can the knowledge grow without a constant studying? But without luck one cannot get a (proper) study material.

ज्ञानेन्द्रियाणि दत्तानि, यस्मै कर्मेन्द्रियैः सह ।

निर्धनः स कथं वाच्यः ?, ततोऽन्यो धनिकोऽस्ति कः ? ॥१७९॥

जिसको कर्मेन्द्रियों के साथ परमात्मा ने ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, वह निर्धन कैसे कहा जाय ? उसके अतिरिक्त और कौन दूसरा धनवान् है ?

How somebody can say that he is poor if the God gave him the senses of knowledge and action? Who is richer than he?

ज्ञानेन्द्रियाणि दत्तानि, येन कर्मन्द्रियैः सह ।

तस्य भगवतः साद्योः, परमोपकृतिर्न किम् ? ॥१८०॥

जिसने कर्मन्द्रियों के साथ ज्ञानेन्द्रियाँ दी है, उस साधु भगवान् का क्या यह परोपकार नहीं हैं ।

Isn't that righteous God benefactor who gave with the senses of action also the senses of knowledge?

ज्योतिषी द्राक्तरो वैद्यो, देवः स्वामी तथा गुरुः ।

रिक्तहस्तं न दृश्येत, जनेन स्वार्थमीप्सता ॥१८१॥

ज्योतिषी, डॉक्टर, वैद्य, देवता, स्वामी तथा गुरु इनका स्वार्थ प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिये कि वह खाली हाथ दर्शन न करे ।

The one who wants to fulfil his selfish desires should not come empty handed if he wants something for the astrologer, doctor, Vaidya (ayurvedic doctor), god, swami and guru.